हमारे समाज का इतिहास

माहेश्वरियों की उत्पत्ति के संबंध में श्री शिवकरणजी दरक व्दारा लिखित **इतिहास कल्पद्रुम माहेश्वरी कुल भूषण** नामक ग्रंथ मे उल्लेख है। वर्तमान में संपूर्ण माहेश्वरी समाज इसी ग्रंथ को प्रामाणिक मानता है।

किवदन्ती है कि आज से लगभग 2500 वर्ष पूर्व 72 खापों के माहेश्वरी मारवाड़ (डीडवाना) में निवास करते थे। अपने धर्माचरण में रत् रहते हुये ईमानदारी पूर्वक व्यवसाय करते एवं सुखी जीवन बिता रहे थे। किन्तु तत्कालीन राजा जो अधर्मी था किसी कारण माहेश्वरी समाज से कुपित हो गया एवं समाज के व्यक्तिया ने अन्यत्र बसने का प्रस्ताव पारित किया। यह तथ्य श्री दरक के इस छन्द से स्पष्ट हो जाता है :

''नृप कोप्यों तजि धर्म को, देन लग्यो दुःख पुर।

त्ब सब मिल कीन्हो, लिखत बसौं दिसन्तर दूर।।

रोपि सुरह सब साह मिलि, तजो नग्र तत्काल।

अंजल कोऊ ना लहै, लिखौं गधांतर गाल।।''

अतः 72 खापों के माहेश्वरियों में से 20 खाप के परिवार अपना धन धान्य से पूरित गृह त्याग कर धाकगढ़ (गुजरात) में जाकर बस गये। वहाँ का राजा दयालु, प्रजापालक एवं व्यापारियों के प्रति सम्मान की भावना रखने वाला था। उसके इन्हीं गुणों से प्रभावित होकर और 12 खापों के माहेश्वरी भी वहाँ आकर बस गये। वचनबद्धंता ही उनकी पहिचान बन गई। इसी संदर्भ में श्री दरक की यह पंक्तियाँ भी माहेश्वरियों के श्रेष्ठ आचरण पर अच्छा प्रकाश डालती है।

''भोजन अति आचार युत, बैठे पंगीत जाय।

ऊर्थ पुण्ड उपनयन युत, पाटम्बर पहिराय।।

उज्वल कुल रीती चले, साखन भाने कोय।

जात पात मरजाद लखि, तबै सगापण होय।।''

इस छंद से यह स्पष्ट होता है कि धाकगढ़ निवासी माहेश्वरीयों का भोजन सात्विक था आचार–विचार एवं रहन–सहन उत्तम था। एक पंक्ति में बैठकर भोजन करते व उपनयन (जनेऊ) व पीताम्बर धारण करते थे। उच्च कुल की मान्यता के साथ जाति मर्यादानुसार वैवाहिक संबंध निश्चित करते थे।

कालांतर में आवागमन की सुविधाओं के अभाव में मारवाड़ के डीडू माहेश्वरियों से इनका (धाकगढ़ निवासी) संबंध विच्छेद होता गया और धाकड़ माहेश्वरी कहलाने लगे। समयान्तर से कुछ माहेश्वरी परिवार आजीविका चलाने हेतु अन्य स्थानों पर भी बसते गये और बसने वाले गांवो के नाम से उनकी पहचान बनी जैसे डीडू जैसलमेरी, बीकानेरी, मेड़तवाल, पोकर, टूंकवाले, खण्डेलवाल (माहेश्वरी) कोलबाह (उत्तर प्रदेश) गुजराती माहेश्वरी आदि। इन समस्त माहेश्वरियों में पहले रोटी बेटी व्यवहार नहीं था परन्तु धीरे–धीरे ये आपस में एक होते गये और आज इनमें रोटी बेटी व्यवहार प्रारंभ हो गया है। अखिल भारतीय माहेश्वरी सभा के एक प्रस्ताव के अनुसार ये अब अपने नाम के आगे माहेश्वरी न लिखकर अपना गोत्र लिखने लगे हैं।

समय व परिस्थितियों के वशीभूत धाकगढ़ के माहेश्वरीयों को धाकगढ़ भी छोड़ना पड़ा और वे वर्तमान आष्टा के पास अवन्तीपुर बड़ोदिया ग्राम में विक्रम संवत 1200 के आस पास आकर बस गये। यहाँ उनके व्दारा निर्मित भगवान शंकर का मंदिर जिसका निर्माण संवत् 1272 में हुआ जो आज भी विद्यमान है एवं अतीत की विस्मृत यादों को ताजा करता है। पुनः वे अन्य स्थानों पर जाकर व्यापार करने लगे। इसी प्रकार कुछ परिवार गुजराती नागर ब्राम्हणों के साथ मिलकर खण्डवा एवं बुरहानपुर में बस गये। हमारे समाज की इन स्थानों पर बहुलता इस तथ्य से प्रमाणित होती है।
उपरोक्त सभी तथ्य श्री शिवकरणजी रामकरणजी दरक माहेश्वरी मारवाड़ी मूडवे वालों व्दारा रचित ग्रंथ ''इतिहास कल्पद्रुम माहेश्वरी कुल भूषण'' से लिये गये हैं। इस ग्रंथ की रचना विक्रम संवत 1898 शके 1762 ईसा सन् 1841 में की गई थी।

उपरोक्त तथ्यों से यह बात निर्विवाद है कि भारतवर्ष के समस्त माहेश्वरी उन्हीं प्रारम्भिक 72 खापों में से ही हैं, जिसका उल्लेख श्री दरकजी ने अपनी पुस्तक में किया हैं।